Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani (L.N.M.U)

Class - B.A - I (H)
Paper - II

Topic - सत्याग्रह का मूल्यांकन

गांधीजी के सत्याग्रह का यदि कुछ व्यक्तियों द्वारा समर्थन किया जाता है तो अनेक आधारों पर इसकी आलोचना भी की जाती है। आलोचना के प्रमुख आधार इस प्रकार है —

(1) सत्याग्रह अहिंसा की धारणा के अनुकूल नहीं है — आलोचकों के अनुसार सत्याग्रह का सिद्धांत अहिंसा की धारणा के अनुकूल नहीं है। अहिंसा का तात्पर्य न केवल हिंसा का त्याग ना, बल्कि विरोधी के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना का भी अभाव है। सत्याग्रह से इन व्यक्तियों को निश्चित रूप से मानसिक और अनेक बार शारीरिक कष्ट भी पहुंचता है जिनके विरुद्ध इसका व्यवहार किया जाता है।

(2) सत्याग्रह का प्रयोग सभी परिस्थितियों में संभव नहीं — आलोचकों के अनुसार प्रत्येक स्थिति में सत्याग्रह का प्रयोग सफलतापूर्वक नहीं किया जा सकता। जैसे समाज में विवेक मानवता का सम्मान तथा न्याय विद्यमान है, वहां सत्याग्रह का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है लेकिन निरंकुश शासन और बौद्धिक तथा नैतिक दृष्टि से बहुत अधिक पिछड़े हुए लोगों के विरुद्ध सत्याग्रह की सफलता सुनिश्चित नहीं होती।

Scanned with CamScanner

(3) अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सत्याग्रह का प्रयोग सम्भव नहीं — सामान्य अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र या विदेशी आक्रमण की स्थिति में सत्याग्रह का प्रयोग सम्भव नहीं है।

(4) आध्यात्मिक साधनों से सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाना अत्यधिक कठिन — साम्यवादी, अराजकतावादी तथा अन्य क्रान्तिकारी विचारधारा वाले व्यक्ति गांधीवादी विचारधारा की आलोचना करते हुए कहते हैं कि सत्याग्रह जैसे आध्यात्मिक साधनों के आधार पर सामाजिक और आर्थिक स्थिति को पूर्णतया बदलने में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है।

उपर्युक्त विचार मन्थन के आधार पर कहा जा सकता है कि सत्याग्रह का औचित्य-अनौचित्य या श्रेष्ठता-निम्नता इस बात पर निर्भर करती है कि इसका प्रयोग किस प्रकार के व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। नैतिक दृष्टि से श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त किये जाने पर यह निश्चित रूप से वीर पुरुषों द्वारा अन्याय के प्रतिरोध हेतु उपयोग में लाये जाने वाला अहिंसक अस्त्र है, लेकिन व्यवहार में अनेक बार अवांछित तत्वों द्वारा

अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए जो कार्रवाई की जाती है, उसे ही सत्याग्रह का नाम दे दिया जाता है और इस आधार पर सत्याग्रह की आलोचना की जाती है। वास्तव में यह दोष सत्याग्रह के नहीं, बल्कि सत्याग्रह के प्रयोग में लाने वाले व्यक्तियों के है।
स्वयं गांधीजी के द्वारा सत्याग्रह के नियम और सत्याग्रही के गुणों का उल्लेख किया गया है और यदि इनका पालन किया जाता है तो निश्चित रूप से सत्याग्रह एक श्रेष्ठ, नैतिक, प्रभावशाली शस्त्र है।

Khushbu Kumari
29th July 2020

Scanned with CamScanner